ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 15 अंक 8 कुल पृष्ठ-8 23 से 29 जनवरी, 2020 दयानन्दाब्द 194 सृष्टि सम्वत् 1960853120 सम्वत् 2076 मा. कृ.-12

ग्राम–सोहासड़ा, जिला–भिवानी (हरियाणा) स्थित गोशाला में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का आह्वान

गोवंश की रक्षा के लिए गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाये

गोसंवर्धन अभयारण्य स्थापित करके बछड़े, बैल एवं वृद्ध गायों को प्रदान किया जाये पूर्ण संरक्षण

गोरक्षा महा अभियान का शुभारम्भ 12 फरवरी, 2020 को सोनीपत (हरियाणा) से होगा

गोहत्या, कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, अश्लीलता एवं धार्मिक अन्धविश्वास के विरुद्ध

12 फरवरी, 2020 से 18 फरवरी (महर्षि दयानन्द जन्मदिवस) 2020 तक भव्य जन–चेतना यात्रा का किया जायेगा आयोजन

यात्रा का शुभारम्भ सोनीपत से 12 फरवरी से होकर समापन 18 फरवरी, 2020 को लोहारू में होगा

गत् 14 जनवरी, 2020 को मकर संक्रांति के अवसर पर श्रीकृष्ण गोशाला ग्राम–सोहासड़ा, तह. –लोहारू, जिला–भिवानी के वार्षिकोत्सव में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। उनके अतिरिक्त महन्त राजनाथ योगी गोशाला लेघा, जिला–भिवानी, स्वामी ब्रह्मानन्द टिटौली व अन्य गणमान्य महानुभाव उपस्थित थे जिनमें मुख्यरूप से युवा समाजसेवी श्री राम अवतार आर्य, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, श्री ओमवीर आर्य सरपंच फरटिया भीमा, श्री जयनारायण आर्य प्रधान आर्य समाज, श्री अशोक आर्य एडवोकेट बहल आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। उत्सव की अध्यक्षता गोशाला के प्रधान व प्रसिद्ध समाजसेवी श्री रमेश चन्द्र कौशिक ने की तथा मंच संचालन श्री अनिल कुमार ने संभाला। हजारों गो प्रेमी जनता को सम्बोधित करते हुए कार्यक्रम के मुख्य अतिथि स्वामी आर्यवेश जी ने लोगों का आह्वान किया कि वे गोरक्षा एवं गोसंवर्धन के लिए आगे आयें। स्वामी जी ने बड़े भावनापूर्ण शब्दों से गोवंश के विनाश पर गहरा दुःख व्यक्त किया और उन्होंने कहा कि यह दुर्भाग्य की बात है कि मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र एवं योगेश्वर श्रीकृष्णचन्द्र जी के देश में सम्पूर्ण गोवंश दर–दर की ठोकरें खा रहा है। लाखों गाय प्रतिदिन कत्लखानों में काट दी जाती हैं और उनके रक्त तथा माँस को डब्बों में बन्द करके चन्द विदेशी मुद्रा कमाने के लिए निर्यात किया जाता है। हजारों बछड़े, बैल एवं बूढ़ी गाय सड़कों पर धक्के खा रही हैं। उन्हें कोई संरक्षण देने को तैयार नहीं है। इस लावारिस गोवंश के तिरस्कार और अपमान को अब और अधिक सहन नहीं किया जा सकता। अतः यह आवश्यकता है कि देश की जनता यह आवाज उठाये कि –

1. सम्पूर्ण गोवंश की रक्षा एवं संवर्धन के लिए गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जाये।
2. गो संवर्धन अभयारण्य स्थापित करके लाखों बछड़ों, बैलों, सांड़ व वृद्ध गायों को संरक्षण दिया जाये।
3. गोपालन के लिए गाय की नस्ल सुधारकर उसे उपयोगी बनाया जाये तथा गाय पालने वाले किसानों को विशेष अनुदान राशि प्रदान करके उत्साहित किया जाये।
4. गाँव में लघु उद्योगों में विशेष रूप से तेल घानी का कोल्हू या अन्य वे लघु उद्योग जिनमें बैलों का उपयोग हो सके वे लघु उद्योग स्थापित किये जायें।
5. गायों के गोबर व गोचर से जैविक खाद एवं कीटनाशक औषधि तैयार की जायें।
6. प्रत्येक गांव में बंजर जमीन पर गोरक्षा एवं गोपालन केन्द्र स्थापित किये जायें।
7. सरकार द्वारा जंगली जानवरों एवं पक्षियों के लिए स्थापित किये जाने वाले राष्ट्रीय पार्कों की तरह गोवंश के लिए भी राष्ट्रीय पार्क बनाये जायें जिनमें उनके लिए पानी, चारा व रहने के लिए स्थान की व्यवस्था की जाये।

श्री राम अवतार आर्य के निवास स्थान लोहारू में जन–चेतना यात्रा के सम्बन्ध में प्रमुख कार्यकर्ताओं के साथ विचार–विमर्श करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी

स्वामी जी ने कहा कि देश की जनता कम से कम एक गाय का पालन अवश्य करें। यदि वह अपने घर पर गाय रखने में सक्षम नहीं है तो एक गाय का वर्षभर का खर्च गो–संवर्धन कोष में जमा कराये।

स्वामी आर्यवेश जी ने घोषणा की कि आर्य

शेष पृष्ठ 4 पर

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

गरिमामय गणतंत्र हमारा

– डॉ. राम बहादुर 'व्यथित'

देश की समृद्धि का रथ तीव्र गति से अग्रसर है। हम व्यक्तिगत अथवा दलगत मतभेदों को भुलाकर, द्वेष भाव त्यागकर इस पवित्र यज्ञ में भाग लें। जिन शहीदों ने स्वाधीनता के प्रहरी बनकर अपना सर्वस्व होम किया है उन हुतात्माओं को हम प्रणाम करें तथा उनकी शहादत का मूल्य चुकाने के लिए उनके पवित्र पथ का अनुगमन करें। भारत के भव्य गणतंत्र का रूप सजाने और संवारने हेतु हम त्याग, तपस्या और सहिष्णुता का पथ अपनायें। यदि हमने लाखों–करोड़ों की सम्पत्ति अर्जित कर ली है तो यह सम्पत्ति यहीं छूट जायेगी। स्वर्गारोहण के समय केवल धर्म हमारे साथ होगा। त्याग, बलिदान और समर्पण करने वाले कर्मवीर मृत्यु के बाद भी याद किये जाते हैं। आईये! हम भी कुछ ऐसा कर दिखाएं कि आने वाली पीढ़ियाँ हमें आदर और श्रद्धा के साथ स्मरण करें।

भूमण्डल का विशालतम गणतंत्र, विश्व का गरिमामय लोकतंत्र संसार का सर्वाधिक बृहद संविधान, जन–जन को समरूप महिमा मण्डित करने वाली न्याय परक आचार संहिता, समाज के दलित और पिछड़े वर्ग के अभ्युत्थान के लिए संकल्पित विशाल विधिकोश, जन साधारण की सेवा सुरक्षा और उनके सर्वांगीण उत्थान के लिए संकल्पबद्ध प्रारूप महान शिक्षाविद् इतिहासवेत्ता डॉ. राजेन्द्र प्रसाद दलितों के मसीहा डॉ. भीमराव अम्बेडकर तथा राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन जैसे महापुरुषों की विद्वन्मण्डली ने लोक कल्याणकारी संविधान की रचना की, जिसे 26 जनवरी, 1950 को भारत ने पूर्ण निष्ठा से अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित किया और भारत ने विशाल गणराज्य की स्थापना की। सुनहरे स्वप्न देखे थे उस विद्वन्मण्डली ने जिसे संविधान की भाषा में 'संविधान निर्मात्री सभा' कहा जाता है। जन–जन के मन में आशा का सूर्य उदित हुआ.. हर्षातिरेक से नाच उठा हर उदास मन... अब भारत बहुमुखी प्रगति करेगा, जन–जन के कष्ट दूर होंगे। प्रत्येक असहाय को सहारा मिलेगा, बेरोजगारों को रोजगार मिलेगा, स्वराज्य की स्थापना होगी, देश प्रत्येक क्षेत्र में समृद्ध होगा, आत्मनिर्भर और स्वावलम्बी बनेगा, बकरी और शेर एक घाट पर निःशंक होकर पानी पियेंगे, सभी को न्याय मिलेगा.... सच, महात्मा गाँधी ने जिस रामराज्य के सपने दिखाये थे... वह भारत ऐसा ही समृद्ध खुशहाल और न्याय प्रिय देश था... उस स्वप्न के अनुसार त्याग, संपर्क और सेवा की मूर्ति होंगे हमारे कर्णधार प्रजा के सच्चे अनुरंजक प्रजा के हित चिन्तक, देशोद्धारक जनता के निःस्वार्थ सेवक, निर्भीक, तेजस्वी और ऊर्जावान प्रतिनिधि जो देश की डूबती हुई नौका को पार लगायेंगे। अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देंगे, भारतमाता की पुष्कल समृद्धि के लिए।

कालचक्र निस्सीम है। दशक व्यतीत होते गये। महात्मा गाँधी, पं. जवाहर लाल नेहरू, सरदार पटेल, सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णन, अबुल कलाम आजाद, रफी अहमद किदवई और लाल बहादुर शास्त्री जैसे विभूतियाँ इस असार संसार से विदा हो गई। राष्ट्रमूर्ति इंदिरा प्रियदर्शनी तथा राजीव गाँधी के बलिदान के बाद मानो त्याग और समर्पण का अध्याय ही समाप्त हो गया। भूख पेट में खाँव–खाँव करने लगी। मन–मस्तिष्क पर स्वार्थ की मोटी परत जम गई। देश की समृद्धि को घोटालों का ग्रहण लगने लगा। राजपुरुषों की हया और शर्म मानों बर्फ की मानिन्द पिघल कर पानी हो गई। एक के बाद एक घोटाला बोफोर्स काण्ड यूरिया काण्ड तेलगी काण्ड जैन बन्धु डायरी ताज कोरिडोर काण्ड, टू जी स्पैक्ट्रम घोटला, व्यापम घोटला और धीरे–धीरे देश इन घोटालों की नजर हो गया राजपुरुषों की आस्था स्वदेश से विचलित होकर स्विस बैंक में केन्द्रित हो गयी। देश की अस्मिता इतनी गिर गई कि भारत के रक्षामंत्री के विदेश पहुँचने पर उनके वस्त्र उतार कर तलाशी ली गई। पाकिस्तान के राष्ट्राध्यक्ष के शुभागमन पर भारत में आगरा को इन्द्रलोक बनाने में करोड़ों की धनराशि पानी की तरह बहा दी। दूसरी ओर भारत के रक्षामंत्री के विदेश पहुँचने पर ऐसा भर्त्सनापूर्ण व्यवहार।

कहाँ गया भारत का वह मार्तण्ड सा चमकता भाल? क्या 58 वर्षों की स्वाधीनता का यही प्रसाद है? यही अनमोल पूंजी हम अर्जित कर पाये इस दीर्घ अन्तराल में? कहीं जघन्य अपराधों में लिप्त मंत्रीगण। कहीं मैच फिक्सिंग में लिप्त यशस्वी खिलाड़ी कहीं विश्वविद्यालयों से 'आउट' होते प्रश्न पत्र कहीं कुख्यात अपराधियों पर 'पोटा' का कलंक और फिर टिनोपाल से वह कलंक धोकर उसी व्यक्ति को मंत्री पद पर अभिषित किया जाना। धन्य है यह लोकतंत्र। विशाल गणतंत्र की दुर्भेद्य अनबूझ पहेलियाँ।

धूल में मिल गये वे सुनहरे स्वप्न जो संविधान निर्मात्री सभा ने संजोये थे। उनका आदर्श था सच्चरित्र, दुग्ध धवल आचरण वाले देश भक्त निर्वाचित होकर सदन में पहुँचेंगे। परखच्चे उड़ गये उस आदर्श के। एक से एक दागदार अपराधी सदन में पहुँच रहा है। परिणाम वही। देश सेवा के नाम पर स्वपोषण, अपनी सात–सात पीढ़ियों का पोषण और जनता जनार्दन? करती रहे त्राहि माम् त्राहि माम्।

खेद! आज सदन में फूल नहीं बिखेरे जाते बल्कि जूते चप्पलें चलती हैं। अपशब्दों का प्रयोग होता है। माइक उखाड़ कर विरोधी दल पर फेंके जाते हैं। सदन की मर्यादा मानो काफूर बनकर उड़ गई। शेष रह गया स्वच्छन्द आचरण। अर्थ दोहन और लोक कल्याण के स्थान पर स्वकल्याणकारी योजनाओं का क्रियान्वयन। धर्म निरपेक्षता का नारा एक फैशन बन गया है। धर्म की सनातन आस्थाओं पर सुनियोजित कुठाराघात हो रहा है। भारत की धर्म प्रवण आस्थाओं पर बाम पन्थ का मंडराता हुआ साया स्पष्ट दृष्टिगोचर हो रहा है जिससे बेखबर होकर भारत की भोली–भाली आस्थावान जनता खर्राटे भरकर सो रही है।

गणतंत्र दिवस की पावन बेला पर हमारी कामना है। इन राजनीतिक षड्यन्त्रों का अन्त हो, हमारे निर्वाचित नेता निहित स्वार्थों को त्यागकर, दलगत भावना से ऊपर उठकर राष्ट्र की सेवा करें और जन–जन की समस्याएँ सुनकर उनका यथा सम्भव समाधान करें। डॉक्टर, इंजीनियर, अधिवक्ता तथा शिक्षक वृन्द, धन–लोलुपता त्यागकर निःस्पृह भाव से कर्त्तव्य पालन करें, बालकों में राष्ट्रभक्ति के भाव अंकुरित करें, उन्हें पश्चिमी संस्कारों में न रंग कर छत्रपति शिवा और राणा प्रताप जैसा वीर और समर्पित सेनानी बनावें। भारत भौगोलिक एवं आर्थिक संसाधनों से समृद्ध राष्ट्र है। जब दो अरब हाथ भारत की पुष्कल समृद्धि के लिए एक साथ व्योम में उठेंगे तो असम्भव भी सम्भव हो जायेगा। हमें चाहिए हम एक दूसरे की उंगली थामकर आगे बढ़ें किसी को पीछे न धकेलें। प्रत्येक धर्म का आदर करें तथा एक–दूसरे की भावनाओं को जानकर उसका मार्ग प्रशस्त करें। श्रुति कहती है –

"संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।"

कोई धर्म घृणा या द्वेष की शिक्षा नहीं देता। हमारा सनातन उद्घोष है –

"श्रूयतां धर्म सर्वस्वं श्रृत्वा चाप्यवधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।।"

सर अल्लामा इकबाल का कथन है – **"मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना हिन्दी हैं हम वतन हैं, हिन्दोस्तां हमारा।"** हमारा प्रयास होना चाहिए। इस गुलशन का हर फूल महके, चमन के प्रत्येक फूल पर शबाब निखरे। इसके लिए परम आवश्यक है घृणा, द्वेष और वैमनस्य का पथ त्याग कर हम मानव मात्र से प्रेम करें। जीवन ताप त्रय से पीड़ित है। दया, ममता और करुणा की त्रिवेणी प्रवाहित होने पर ही मानव के मन की प्यास बुझेगी और जन–जन के हृदय में अमृत स्पन्दिनी मन्दाकिनी प्रवाहित होगी। हम पवित्र मन से संकल्प लें।

देश की समृद्धि का रथ तीव्र गति से अग्रसर है। हम व्यक्तिगत अथवा दलगत मतभेदों को भुलाकर, द्वेष भाव त्यागकर इस पवित्र यज्ञ में भाग लें। जिन शहीदों ने स्वाधीनता के प्रहरी बनकर अपना सर्वस्व होम किया है उन हुतात्माओं को हम प्रणाम करें तथा उनकी शहादत का मूल्य चुकाने के लिए उनके पवित्र पथ का अनुगमन करें। भारत के भव्य गणतंत्र का रूप सजाने और संवारने हेतु हम त्याग, तपस्या और सहिष्णुता का पथ अपनायें। यदि हमने लाखों–करोड़ों की सम्पत्ति अर्जित कर ली है तो यह सम्पत्ति यहीं छूट जायेगी। स्वर्गारोहण के समय केवल धर्म हमारे साथ होगा। त्याग, बलिदान और समर्पण करने वाले कर्मवीर मृत्यु के बाद भी याद किये जाते हैं। आईये! हम भी कुछ ऐसा कर दिखाएं कि आने वाली पीढ़ियाँ हमें आदर और श्रद्धा के साथ स्मरण करें। बलिदानों की परिपाटी अमर रहें। भारत माता के हाथ में सुशोभित तिरंगा ध्वज युगों–युगों तक व्योम में फहराता रहे। भारत महान की कीर्ति विश्व में अमर रहे चिरस्थाई हो यही हमारी मंगल कामना है।

"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः नमो मात्रे पृथिव्यै।"

– विजय वाटिका, कोठी नं.–3, सिविल लाइन्स, बदायूँ (उ. प्र.)

वेदाधारित हो गणतन्त्र

जिसके अंकुर को सींचा था, अमर शहीदों ने शोणित से,
वही दिखायी अब पड़ते हैं, उत्पीड़ित से व शोषित से।
सभी जगह नीचे से ऊपर, व्याप्त हुआ है भ्रष्टाचार,
पतित हुआ है चरित्र राष्ट्र का, बढ़ा जा रहा अत्याचार।
सत्ताधारी शासक सारे, हुए स्वार्थ में अन्धे है,
स्वार्थपूर्ति के लिए उन्होंने, किए प्रदूषित धन्धे हैं।
सत्य धर्म ले रहा सिसकियां, दानवता हो गई विभोर,
डाँट रहा है अब सुजनों को, पापाचारी कलुषित चोर।
पश्चिम की आंधी ने कैसा, आज यहां कुहराम मचाया,
सत्य सनातन की संस्कृति को, इस धरती से आज उड़ाया।
टूट रहे परिवार हमारे, टूट रहा सम्पूर्ण समाज,
उग्रवाद के जालों में फंस, हुआ प्रकम्पित भारत आज।
सीमाएं भी आज देश की, नहीं रही सम्पूर्ण सुरक्षित,
लगा हुआ है आज दांव पर, भारत का सर्वोपरि हित।
विषम परिस्थितियों से होंगे, कैसे हम सब अब उन्मुक्त,
आओ करें विचार सभी हम, कैसे हो इनसे अब मुक्त।
एक मार्ग ही शेष बचा है, वैदिक पथ हम सब अपनाएं,
जिससे मानवता रक्षित हो, दानवता को दूर भगाएं।
महिमण्डल पर सर्वोपरि हो, भारत, फिर जागे वह मन्त्र,
जयी बने फिर से मानवता, वेदाधारित हो गणतन्त्र।

- राधेश्याम आर्य

वसुधैव कुटुम्बकम् का स्वप्न देखा था भगत सिंह ने

सरदार भगत सिंह के क्रान्तिकारी रूप से देश ही नहीं, सारी दुनिया परिचित है लेकिन वह एक उच्च कोटि के लेखक और विचारक भी थे, यह बात हर कोई नहीं जानता। देशप्रेम, समाजोत्थान और मानवता के संदर्भ में भगतसिंह के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक है जितने उनके अपने दौर में थे। देशभक्ति पूर्ण लेखों से जनमानस को प्रेरणा देने वाले भगतसिंह ने बलवंत सिंह छद्मनाम से कलकत्ता से प्रकाशित 'मतवाला' पत्र में 'विश्व-प्रेम' नाम का एक ओजपूर्ण लेख लिखा था जिसमें 'वसुधैव कुटुम्बकम' की अवधारणा पर विचार करते हुए उसके आधार पर किस तरह से विश्वबंधुत्व कायम किया जा सकता है, इस पर बल दिया गया है। प्रस्तुत हैं लेख के संपादित अंश

'वसुधैव कुटुम्बकम!' जिस कवि सम्राट की यह अमूल्य कल्पना है, जिस विश्व प्रेम के अनुभवी का यह हृदयोद्गार है, उसकी महत्ता का वर्णन करना मनुष्य शक्ति से सर्वथा बाहर है।

विश्वबंधुता! इसका अर्थ मैं तो समस्त संसार में समानता के अतिरिक्त और कुछ नहीं समझता। कैसा उच्च है यह विचार ! सभी अपने हों। कोई पराया न हो। कैसे सुखमय होगा वह समय, जब संसार से परायापन सर्वथा नष्ट हो जाएगा। जिस दिन यह सिद्धांत समस्त संसार में व्यावहारिक रूप में परिणत होगा, उस दिन संसार को उन्नति के शिखर पर कह सकेंगे। जिस दिन प्रत्येक मनुष्य इस भाव को हृदयंगम कर लेगा, उस दिन–उस दिन संसार कैसा होगा? जरा इसकी कल्पना करो तो!

उस दिन इतनी शक्ति होगी कि शांति–शांति की पुकार भी शांति भंग न कर सकेगी। उस दिन भूख लगने पर रोटी के लिए किसी को चिल्लपों मचाने की आवश्यकता नहीं हुआ करेगी। व्यापार उस दिन उन्नति के शिखर पर होगा। फ्रांस और जर्मनी में व्यापार के नाम पर घोर युद्ध न हुआ करेंगे। उस दिन अमेरिका और जापान दोनों होंगे परन्तु उनमें पूर्वी और पश्चिमीपन न होगा। काले–गोरे उस दिन भी होंगे परन्तु अमेरिकावासी वहां के काले निवासी को जीते–जी जला न सकेंगे। शांति होगी मगर पीनल कोड की आवश्यकता न होगी। अंग्रेज भी होंगे और भारतवासी भी, परन्तु उस समय उनमें गुलाम और शासक का भाव न होगा। उस दिन महात्मा टॉल्स्टॉय के रेजिस्ट नॉट दि ईविल (बुराइयों का प्रतिकार मत करो) वाले सिद्धांता की उच्च ध्वनि न लगाने पर भी संसार में बुराइयां नजर न आएंगी। उस समय होगी पूर्ण स्वतंत्रता। कैसा होगा वह समय? जरा कल्पना करो।

वर्तमान दशा को देखकर कौन कह सकता है कि ऐसा समय भी आ सकता है, जिस समय किसी के भय से नहीं, परन्तु अपने हृदय की प्रेरणा से ही मनुष्य पाप–कर्म नहीं करेंगे। यदि उस दिन भी हमें किसी कल्पित स्वर्ग की लिप्सा होगी तो हम कह देंगे कि स्वर्ग कोई दूसरी वस्तु है ही नहीं! क्या वह समय आ सकता है? यह एक बड़ी समस्या है। इसका उत्तर देना कोई सुगम कार्य नहीं है। परन्तु मैं पूछता हूँ कि क्या लोग उस समय को लाना चाहते हैं? वह लोग जो विश्वबंधुता का घोर नाद किया करते हैं, क्या वास्तव में उसे लाने के इच्छुक हैं? हां, कह देने से ही काम नहीं चलेगा।... प्रश्न गंभीरतापूर्वक विचार करने योग्य है। क्या लोग उसके लिए बलिदान देने के लिए तैयार हैं? उस कल्पित भविष्य के लिए हमें घोर वर्तमान देना होगा। उस हवाई किले के लिए हमें सर्वस्व देना होगा।... उस सुखमय जीवन के लिए नहीं–नहीं, उसकी आशा मात्र के लिए मर मिटना होगा। क्या लोग उसके लिए तैयार हैं?

हमें प्रचार करना होगा समता–समानता का। अत्याचार करना होगा उन पर जो उससे इनकारी हों। अराजकता फैलानी होगी उन राज्य साम्राज्यों के स्थान पर, जो शक्तिमद से अंधे होकर करोड़ों की पीड़ा का कारण हो रहे हैं। क्या लोग उसके लिए तैयार हैं। हमें समस्त संसार को उस सिद्धांत के स्वागत के लिए तैयार करना होगा। उस आशामयी खेती के लिए हमें खेतों में से सब कुछ उखाड़ फेंकना होगा कांटेदार झाड़ियों को उखाड़कर ज्वाला की शांति के लिए मटियामेट कर देना होगा। रोड़ा कंकड़ पीस डालना होगा। हमें घोर परिश्रम करना होगा।... अत्याचार का सर्वनाश करना होगा। पराधीनता को मिट्टी में मिला देना होगा क्योंकि यह अपनी कमजोरी के कारण उस मनुष्य जाति को, जिसकी सृष्टि परमपिता ने अपने ही अनुरूप की थी, न्यायपथ से भ्रष्ट करने का प्रलोभन दे रहा है।...

आये! कौन माता का लाल सच्चे हृदय से विश्वबंधुता का इच्छुक है। कौन है समस्त संसार के लिए अपना सुख बलिदान करने वाला? कोई गुलाम जाति इस उच्चतम सिद्धांत का नाम तक लेने की अधिकारिणी नहीं है। एक गुलाम मनुष्य के मुख से निकलकर इसका महत्व ही जाता रहता है। अपमानित मनुष्य, पददलित मनुष्य, पैरों तले रौदें जाने वाला मनुष्य यदि कहे– 'मैं विश्वबंधुता का अनुगामी हूँ, युनिवर्सल ब्रदरहुड का पक्षपाती हूँ, इसलिए इन अत्याचारों का प्रतिकार नहीं करता तो उसका कथन क्या मूल्य रखता है? कौन सुनेगा उसके इस कायरतापूर्ण वाक्य को? हां, तुममें शक्ति हो, तुममें बल हो, चाहो तो बड़े–बड़ों को पैरों तले रौद सको, एक इशारे पर बड़े–बड़े अभिमानियों को मिट्टी में मिला सको, तख्ते ताजवालों को खाक में सुला सको, उनको धूलि में मिला सको और फिर यह वाक्य कहते हुए कि 'हम विश्वप्रेमी हैं', ऐसा न करो तो तुम्हारी बात वजनदार होगी–फिर तुम्हारा एक–एक वाक्य प्रभावशाली होगा। फिर 'वसुधैव कुटुम्बकम्' भी महत्वपूर्ण हो जाएगा।

...जब तक काला–गोरा, सभ्य–असभ्य, शासक–शासित, धनी– निर्धन, छूत–अछूत आदि शब्दों का प्रयोग होता है, तब तक कहां विश्व बंधुता और विश्वप्रेम?यह उपदेश स्वतंत्र जातियां कर सकती हैं। भारत जैसी गुलाम जाति इसका नाम नहीं ले सकती। फिर उसका प्रचार कैसे होगा? तुम्हें शक्ति एकत्र करनी होगी। शक्ति एकत्र करने के लिए अपनी एकत्रित शक्ति खर्च कर देनी पड़ेगी। राणा प्रताप की तरह आयुपर्यंत ठोकरें खानी पड़ेंगी, तब कहीं उस परीक्षा में उत्तीर्ण हो सकोगे। देखते नहीं, विश्वबंधुता का सच्चा प्रचारक था मेजिनी, जो बीस वर्ष स्वयं ही एक जगह बंद रहता है। लेकिन था उसका पक्षपाती–असहनीय कष्ट सहन किये थेउसने। विश्वबंधुता का अनुगामी जॉर्ज वाशिंगटन था– अमेरिका का मुक्ति प्रदाता। फ्रांस के क्रांतिकारी नेता थे कट्टर पक्षपाती–कितना रूधिर उन्होंने बहा दिया था। आदर्शवादी ब्रूट्स था विश्वप्रेमी, जिसने अपनी जन्मभूमि के लिए अपने परम प्रिय सीजर को अपने हाथों कत्ल कर डाला था और पीछे स्वयं भी आत्महत्या कर ली थी। सानंद युद्धों में प्रवीण रहने वाला गैरीबाल्डी था, जिसे विश्वप्रेमी होने का श्रेय प्राप्त हो सकता है। विश्वप्रेमी वह वीर है, जिसे भीषण विप्लववादी, कट्टर अराजकतावादी कहने में हम लोग तनिक भी लज्जा नहीं समझते–वही वीर सावरकर, विश्व प्रेम की तरंग में आकर घास पर चलते–चलते रुक जाते कि कोमल घास पैरों तले मसल जाएगी।.. विश्वप्रेम की देवी का उपासक था गीता रहस्य का लेखक पूज्य लोकमान्य तिलक।... अरे! रावण और बाली को मार गिराने वाले रामचंद्र ने अपने विश्वप्रेम का परिचय दिया था भीलनी के जूठे बेरों को खाकर।चचेरे भाइयों में घोर युद्ध करवा देने वाले संसार से अन्याय को सर्वथा मिटा देने वाले कृष्ण ने परिचय दिया अपने विश्वप्रेम का सुदामा के कच्चे चावलों को फांक जाने में। तुम भी विश्वप्रेम का दंभ भरते हो! पहले पैरों पर खड़ा होना सीखो। स्वतंत्र जातियों में अभिमान के साथ सिर ऊँचा करके खड़े होने के योग्य बनो। जब तक तुम्हारे साथ कामागाटामारू जहाज जैसे दुर्व्यवहार होते रहेंगे, जब तक डैम, काला मैन कहलाओगे तब तक तुम्हारे देश में जलियांवाले बाग जैसे भीषण हत्याकांड होते रहेंगे। जब तक वीरांगनाओं का अपमान होगा और तुम्हारी ओर से कोई प्रतिकार न होगा; तब तक तुम्हारा यह ढोंग कुछ माने नहीं रखता। कैसी शांति, कैसा सुख और कैसा विश्वप्रेम?

यदि वास्तव में चाहते हो, कि संसारव्यापी सुख शांति और विश्वप्रेम का प्रचार करो तो पहले अपमानों का प्रतिकार करना सीखो। माँ के बंधन काटने के लिए कट मरो। बंदी मां को स्वतंत्र करने के लिए आजन्म कालेपानी में ठोकरें खाने को तैयार हो जाओ। सिसकती मां को जीवित रखने के लिए मरने को तत्पर हो जाओ। तब हमारा देश स्वतंत्र होगा। हम बलवान होंगे। हम छाती ठोककर विश्वप्रेम का प्रचार कर सकेंगे। संसार को शांति पथ पर चलने को बाध्य कर सकेंगे।

('भगत सिंह और उनके साथियों के दस्तावेज' पुस्तक से साभार)

कर्मठ आर्यनेता श्री धर्मवीर आर्य से मिलने के लिए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी उनके निवास स्थान बरवाला, जिला–हिसार पहुंचे

गत दिनों सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी आर्य समाज के कर्मठ नेता श्री धर्मवीर आर्य, कोंठ कलां से उनके निवास बरवाला, जिला–हिसार, हरियाणा में उनसे मिलने के लिए विशेष रूप से पहुंचे।

श्री धर्मवीर आर्य जी की आयु 88 वर्ष हो चुकी है और इन दिनों वे बाहर आने–जाने में असमर्थ हैं। विदित हो कि श्री धर्मवीर आर्य जी का नाम उन अगली पंक्ति के आर्य नेताओं में आता है जिन्होंने सन् 1967–68 में आर्य जगत के महान नेता व तेजस्वी त्यागी संन्यासी स्वामी इन्द्रवेश जी के नेतृत्व में अपना पूरा समय देकर कार्य प्रारम्भ किया था।

आर्य सभा के माध्यम से किसान आन्दोलन व विविध आन्दोलनों में बढ़–चढ़कर भाग लिया था और संघर्ष तथा त्याग का परिचय देते हुए अपना पूरा समय एवं साधन संगठन के लिए प्रदान किये थे। ऐसे प्रेरणादाई व्यक्तित्व से मिलने के लिए सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी स्वयं उनके पास गये और उनके साथ अनेक विषयों पर विस्तार से चर्चा की तथा उनके स्वास्थ्य की कुशल–क्षेम पूंछी।

पृष्ठ 1 का शेष

12 फरवरी, 2020 से 18 फरवरी (महर्षि दयानन्द जन्मदिवस) 2020 तक भव्य जन–चेतना यात्रा का किया जायेगा आयोजन

समाज राष्ट्रीय स्तर पर गोसंवर्धन कोष की स्थापना करेगा जिसके माध्यम से गोरक्षा एवं गोसंवर्धन के कार्य को संचालित किया जायेगा। स्वामी जी ने लोगों का आह्वान किया कि जो लोग गोरक्षा अभियान से जुड़ने के इच्छुक हैं वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002 के पते पर अपना पूरा परिचय एवं अपना संकल्प पत्र भेजें। हरियाणा में गोरक्षा महाअभियान से जुड़ने के लिए हरियाणा के लोग 'स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम' ग्राम टिटौली, जिला–रोहतक, हरियाणा के पते पर पत्र व्यवहार करें तथा अभियान के सदस्य बनें। जो महानुभाव अपना पूरा समय देना चाहते हैं या अपने क्षेत्र में विशेष कार्य करने के लिए दायित्व लेना चाहते हों या महा अभियान के लिए दान स्वरूप सहयोग देना चाहते हों उनसे आग्रह है कि वे अवश्य सम्पर्क करें। स्वामी आर्यवेश जी ने समाज में बढ़ती हुई नशाखोरी एवं अश्लीलता को चारित्रिक पतन का मुख्य कारण बताया। उन्होंने कहा कि महिलाओं पर हो रहे अत्याचार एवं उत्पीड़न के पीछे शराब एवं अश्लील फिल्में, अश्लील साहित्य (पत्र–पत्रिकाएं, नावेल आदि), गूगल पर परोसी जा रही अश्लील सामग्री आदि मुख्य रूप से उत्तरदाई हैं। अतः यह आवश्यक है कि इन सभी बुराईयों के स्रोतों पर सरकार गम्भीरता से विचार करे तथा प्रतिबन्ध लगाये।

समाज में फैल रहे धार्मिक अन्धविश्वास एवं पाखण्ड से मनुष्य भ्रांतियों का शिकार हो रहा है और इसके कारण नर–बलि, पशु–बलि, तन्त्र–मन्त्र, जादू–टोना, गन्डे ताबीज व विविध विज्ञानरहित क्रियाएं प्रभावी हो रही हैं और पूरा समाज अन्धकार की ओर धकेला जा रहा है। इन समस्त बुराईयों के विरुद्ध आर्य समाज निरन्तर प्रचार–प्रसार के द्वारा अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। आने वाली 12 फरवरी, 2020 से 18 फरवरी (महर्षि दयानन्द जन्मदिवस) 2020 तक हरियाणा के सोनीपत, रोहतक, जीन्द, कैथल, फतेहाबाद, हिसार व भिवानी आदि जिलों में भव्य जन–चेतना यात्रा निकाली जायेगी जिसके दौरान सैकड़ों गाँव एवं शहरों में रैलियों, जनसभाओं एवं नुक्कड़ सभाओं के द्वारा जागृति पैदा की जायेगी। समितियों का गठन किया जायेगा और अखबार तथा मीडिया के माध्यम से इन बुराईयों के विरुद्ध आवाज उठाई जायेगी।

स्वामी आर्यवेश जी ने यात्रा में शामिल होने के लिए सभी आर्य संन्यासियों, वानप्रस्थियों एवं कार्यकर्ताओं से अपील की कि वे शीघ्रातिशीघ्र अपनी स्वीकृति की सूचना कार्यालय में भिजवायें ताकि वाहन एवं आवास आदि की व्यवस्था ठीक से की जा सके।

इस अवसर पर गोशाला की ओर से स्वामी आर्यवेश जी को शॉल एवं स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया और गोरक्षा महा अभियान में अपना पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया गया।

कार्यकर्ताओं की बैठकें

1. स्वामी आर्यवेश जी ने मकर संक्रांति के दिन प्रातः 9 बजे हनुमान जोहड़ी मंदिर, भिवानी में कर्मठ युवा संत महेन्द्र चरणदास जी महाराज के साथ गोरक्षा महा अभियान के सम्बन्ध में विस्तार से चर्चा की और उनसे अभियान में जुड़कर भिवानी जिलें में कार्य करने का आग्रह किया। महेन्द्र चरण दास जी ने स्वामी जी को सहयोग का पूरा आवश्वासन देते हुए अपना समर्थन व्यक्त किया।
2. आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री बाबूलाल आर्य के संयोजन में उनके निवास ग्राम–जूई, जिला–भिवानी में सायं 3 बजे कार्यकर्ताओं की एक महत्त्वपूर्ण बैठक आहूत की गई जिसमें गोशाला जूई के युवा प्रधान श्री आशीष, आर्य समाज के प्रधान श्री महेन्द्र सिंह, श्री सत्य नारायण, श्री पवन शर्मा पत्रकार, श्री अनिल लांबा पत्रकार आदि महानुभाव उपस्थित थे। सभी ने सर्वसम्मति से इस जन–चेतना के अभियान में अपना सहयोग देने की घोषणा की।
3. इस अवसर पर ए.ए. न्यूज बुलेटिन के निदेशक श्री अनिल लांबा जी ने स्वामी आर्यवेश जी का गोरक्षा महा अभियान एवं सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध आयोजित जन–चेतना यात्रा के सम्बन्ध में साक्षात्कार रिकॉर्ड किया और उसे अपने न्यूज चैनल के माध्यम से हजारों लोगों तक पहुँचाने का आर्य किया।
4. श्री राम अवतार आर्य जी के लोहारू स्थित निवास स्थान पर प्रमुख कार्यकर्ताओं की बैठक प्रातः 11 बजे स्वामी आर्यवेश जी के साथ आयोजित की गई जिसमें श्री राम अवतार जी के अतिरिक्त श्री ओमवीर आर्य सरपंच, श्री अशोक आर्य एडवोकेट, श्री सतीश पत्रकार, कु. मुकेश आर्या, कु. कविता आर्या व कल्याणी आर्या आदि उपस्थित थे। सभी ने जन–चेतना यात्रा के 18 फरवरी, 2020 को होने वाले विशाल समापन समारोह को सफल बनाने के लिए जिम्मेदारियाँ ली।

अपने दिनभर के व्यस्त कार्यक्रम से निवृत्त होकर स्वामी आर्यवेश जी रात्रि 11 बजे स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक में पहुंचे और वहीं पर रात्रि विश्राम किया।

आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता श्री बाबूलाल आर्य जी के संयोजन में उनके निवास ग्राम जूई में गोवंश की रक्षा तथा संवर्द्धन के सम्बन्ध में प्रमुख कार्यकर्ताओं के साथ विचार–विमर्श करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी

श्री रमन खुल्लर, मुकेरियां, जिला–होशियारपुर, पंजाब के निवास पर

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी द्वारा विशेष यज्ञ एवं शंका–समाधान द्वारा मार्ग दर्शन

गत 28 नवम्बर, 2019 को मुकेरियां, जिला–होशियारपुर में प्रतिष्ठित उद्योगपति एवं आर्यत्व से ओत–प्रोत श्री रमन खुल्लर जी के निवास पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी उनके विशेष आग्रह पर पारिवारिक यज्ञ में सम्मिलित हुए तथा अपनी उपस्थिति में यज्ञ को सम्पन्न कराकर सभी परिजनों को आशीर्वाद प्रदान किया। यज्ञ के उपरान्त स्वामी आर्यवेश जी के साथ बैठकर परिवार के सभी सदस्यों ने वैदिक सिद्धान्तों पर विविध शंकाओं का समाधान प्राप्त करके ज्ञान वृद्धि की।

विदित हो कि श्री रमन खुल्लर जी का परिवार आर्य विचारों से ओत–प्रोत है और स्वाध्याय तथा कर्मकाण्ड में आपकी विशेष रुचि है। विभिन्न सामाजिक कार्यों में आप समय–समय पर अपना योगदान देकर पुण्य लाभ प्राप्त करते हैं। उनके विशेष आग्रह पर स्वामी आर्यवेश जी उनके पारिवारिक यज्ञ में सम्मिलित हुए थे। परिवारजनों ने हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए स्वामी जी से आग्रह किया कि वे भविष्य में भी समय–समय पर आकर उनका मार्गदर्शन करते रहें। परिवार की ओर से स्वामी जी का आतिथ्य एवं विशेष सम्मान किया गया।

जर्मनी में रहने वाले श्री राम प्रहलाद शर्मा जी की पूज्या माता श्रीमती शीला देवी जी का देहावसान

स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक में किया गया शांति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा

प्रसिद्ध समाजसेवी श्री राम प्रहलाद शर्मा जी जो निरन्तर 40 साल से जर्मनी में रह रहे हैं। उनकी पूज्या माता श्रीमती शीला देवी जी का 90 वर्ष की आयु में गत 2 जनवरी, 2020 को चण्डीगढ़ में निधन हो गया। उनकी अन्त्येष्टि 4 जनवरी, 2020 को स्वयं श्री राम प्रहलाद शर्मा जी ने जर्मनी से भारत लौटकर उनके पैतृक गांव डोहनाल (पंजाब) में पूर्ण वैदिक रीति से किया। अपनी माता जी के पार्थिव शरीर को स्वयं श्री राम प्रहलाद शर्मा जी ने मुखाग्नि दी। उनके छोटे भाई श्री बलराम शर्मा अमेरिका से पधारे तथा दूसरे छोटे भाई श्री कमल शर्मा जिनके साथ माता जी रहती थीं वे भी अन्त्येष्टि में सम्मिलित हुए। श्री राम प्रहलाद शर्मा जी आर्य समाज की गतिविधियों से पिछले 45 साल से जुड़े हुए हैं और उनका सभी समाजोपयोगी कार्यों में विशेष योगदान रहता है। स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, रोहतक हरियाणा के विशिष्ट सहयोगियों में से एक हैं। अतः स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम में गत 18 जनवरी को प्रातः 10 बजे शांति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में श्री राम प्रहलाद शर्मा स्वयं उपस्थित थे और सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के सान्निध्य में पूरा कार्यक्रम संचालित हुआ। यज्ञ के उपरान्त स्वर्गीया माता जी को श्रद्धांजलियां अर्पित की गई।

इस अवसर पर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि माता शीला देवी जी अत्यन्त श्रद्धालु, परोपकारी तथा धर्मपारायणा माता थीं। उन्होंने अपनी सन्तानों को उच्च संस्कार तथा शिक्षा देकर अत्यन्त योग्य बनाया। उनके अथक परिश्रम और प्रदत्त संस्कारों के कारण उनकी सन्तान आज देश–विदेश में अत्यन्त सम्पन्नतापूर्ण प्रतिष्ठित जीवन बिता रही हैं तथा माता जी के धार्मिक एवं परोपकारी कार्यों को आगे बढ़ा रही हैं। अपने 90 वर्षीय आदर्श जीवन को जीते हुए उन्होंने हमेशा अपने आपको धार्मिक कार्यों तथा परोपकार में लगाये रखा। वे अन्तिम समय तक अपने परिवार को संरक्षण प्रदान करती रहीं। ऐसी ममतामयी कर्त्तव्य परायणा तथा अत्यन्त परोपकारी माता के चले जाने का हम सबको अत्यन्त कष्ट है। मैं परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शांति तथा सद्गति एवं परिवार को इस असह्य कष्ट को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना करता हूँ और इस दुःख की घड़ी में मैं भी अपने आपको उनके परिवार के साथ शामिल करता हूँ।

श्रद्धांजलि देने वालों में सर्वश्री बिरजानन्द जी एडवोकेट बहरोड़, श्री रामनिवास नारनौल, बहन प्रवेश आर्या एवं बहन पूनम आर्या, शशि आर्या एच.सी.एस., रीमा आर्या, कु. पूजा आर्या, श्रीमती तृप्ति आर्या, श्री राजीव वशिष्ठ, श्री अर्जुन सिंह डी.एस.पी., मा. प्रदीप कुमार, श्री अजय पाल आर्य, श्री जय भगवान आर्य, श्री नरेश शर्मा, श्री राजेन्द्र आर्य व श्री वीरेन्द्र पहलवान खटकड़ व श्री इन्द्रजीत शास्त्री आदि उपस्थित थे। इस अवसर पर प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् डॉ. बलवीर आचार्य ने अपना आध्यात्मिक प्रवचन देकर विशेष मार्गदर्शन किया। स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने भी अपने दोहे व चौपाई सुनाकर श्रद्धांजलि दी तथा ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य जी ने पूरे कार्यक्रम का संयोजन एवं व्यवस्था को कुशलता के साथ संभाला। शांति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

वैदिक आश्रम सोमधाम खेड़ला, जिला–गुरुग्राम का वार्षिकोत्सव एवं यज्ञ उत्साह के साथ हुआ सम्पन्न

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं सभामंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी समापन समारोह में हुए सम्मिलित

गत् 24 नवम्बर, 2019 को वैदिक आश्रम सोमधाम खेड़ला, जिला–गुरुग्राम, हरियाणा का वार्षिक समारोह बड़े धूमधाम के साथ मनाया गया। इससे पूर्व आश्रम में सामवेद पारायण यज्ञ का अनुष्ठान स्वामी यतीश्वरानन्द जी महाराज के ब्रह्मत्व में आयोजित हुआ। इसमें क्षेत्र के अनेक यज्ञ प्रेमी महानुभावों ने सम्मिलित होकर आहुतियां प्रदान की। 24 नवम्बर, 2019 को सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी भी कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। उन्होंने अपने विद्वतापूर्ण विचारों से उपस्थित जनता का ज्ञानवर्द्धन किया।

प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने यज्ञ के वैज्ञानिक स्वरूप पर विद्वतापूर्ण प्रकाश डालकर जनता का विशेष रूप से ध्यान आकृष्ट किया। सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने यज्ञ को परोपकार का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण बताते हुए उसकी महिमा पर प्रकाश डाला। इस कार्यक्रम में स्वामी देवव्रत जी, डॉ. ओम प्रकाश योगी जी, महाशय ईश्वर सिंह आर्य जी आदि ने भी अपने विचार रखे। सोमधाम के संचालक युवा संन्यासी स्वामी विजयवेश जी ने आश्रम की ओर से सभा प्रधान, सभा मंत्री एवं अन्य विद्वानों का स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मान किया। साध्वी बहन मुक्तानन्दा ने सभी आगन्तुक महानुभावों का धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम अत्यन्त प्रभावशाली रहा तथा क्षेत्र के गणमान्य महानुभावों ने इसमें बढ़–चढ़कर भाग लिया।

आर्य समाज खाण्डा खेड़ी, जिला–हिसार, हरियाणा के वार्षिकोत्सव में

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के व्याख्यानों की रही धूम

श्री रामनिवास आर्य भजनोपदेशक ने अपने ओजस्वी भजनों द्वारा जनता को किया अत्यन्त प्रभावित

आर्य समाज खाण्डा खेड़ी, जिला–हिसार, हरियाणा की वह आर्य समाज है जिसके साथ अनेक घटनाओं का इतिहास जुड़ा है। हैदराबाद आन्दोलन तथा हिन्दी आन्दोलन जैसे ऐतिहासिक आन्दोलनों में इस आर्य समाज की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है तथा इसी आर्य समाज के प्रेरणास्रोत स्व. चौ. मित्रसेन आर्य का नाम भी जुड़ा हुआ है। चौ. मित्रसेन आर्य जी ने अपने पूज्य पिता स्व. श्री शीशराम आर्य एवं पूज्य दादा स्व. चौ. राजमल जी द्वारा दिये गये संस्कारों के अनुरूप आर्य समाज के लिए ऐतिहासिक सहयोग एवं योगदान दिया। उस आर्य समाज का नेतृत्व वर्तमान में गांव के प्रतिष्ठित आर्य समाजी चौ. दिलबाग सिंह आर्य पटवारी कर रहे हैं। आर्य समाज के वार्षिकोत्सव में इस वर्ष सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी को मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया तथा स्वामी जी के प्रातःकाल एवं सायंकाल में ओजस्वी व्याख्यान वैदिक सिद्धान्तों पर हुए।

स्वामी जी की ओजस्वी एवं सर्वसुलभ शैली से ग्रामीण जनता अत्यधिक प्रभावित हुई और उनके व्याख्यानों की धूम मची रही।

उत्सव में आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री रामनिवास आर्य मुख्य रूप से आमंत्रित थे। उनके ओजस्वी एवं क्रांतिकारी भजनों ने श्रोताओं का मन मोह लिया और उनकी भूरि–भूरि प्रशंसा की। इस त्रिदिवसीय उत्सव में यज्ञ के ब्रह्मा युवा विद्वान आचार्य अर्जुनदेव जी उपस्थित रहे। उनके अतिरिक्त सर्वश्री महेन्द्रपाल आर्य महामंत्री राजार्य सभा, कु. तनु आर्या आदि भी कार्यक्रम में सम्मिलित रहे। उत्सव अत्यन्त सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

नवजीवन, नवोत्साह एवं साहसी देशभक्त वीरों के अमर बलिदानों का प्रतीक

'ऋतुराज बसन्त'

– सत्यबाला देवी

नव जीवन के प्रतीक प्रकृति नटी के अनुपम सौन्दर्य एवं मातृभूमि के गौरव, सम्मान एवं स्वतन्त्रता की रक्षा हेतु दीवाने और साहसी वीरों के अमर बलिदानों के महापर्व ऋतुराज बसन्त के शुभागमन से समस्त चराचर सृष्टि में हर्ष उल्लास, उमंग एवं उत्साह का सागर हिलोरें लेने लगता है। समस्त प्राकृतिक वातावरण में शोभा और सौन्दर्य बिखर जाता है। प्रकृति सुन्दरी नव पल्लवों का हरित परिधान धारण किए, नाना रंग बिरंगे कुसुमों के विविध आभूषणों से अलंकृत सरसों के पीत वर्ण पुष्पों की बासन्ती साड़ी से आवेष्टित, सोलह श्रृंगार किए सजी संवरी नई नवेली दुल्हन सी अपने प्रियतम बसन्त का अभिनन्दन करने हेतु उद्यत हो उठती है। यही नहीं कल–कल निनादिनी पुण्य सलिला सरिताएँ भी ऋतुराज बसन्त का अभिषेक करने हेतु उत्सुक हो उठती है। पुष्प गुच्छों पर गुज्जार करते हुए मधुपान द्वारा तृप्त मस्त भ्रमरगण, कलरव करते विविध विहंग समूह, आम्रकुंजों में पंचम स्वर अलापती उन्मत्त कोकिला आदि मानों बन्दी गणों के रूप में ऋतुराज की अभ्यर्थना करते हुए, उसका प्रशस्ति गान कर एक निराले ही रहस्यमय लोक का सृजन कर, अखिल सृष्टि को मधुरिम प्रेम का सन्देश वहन करते हुए समस्त वातावरण को प्रेममय प्रेरणादायक, स्फूर्तिमय, उत्साहवर्धक, स्निग्ध, मधुर, सरस एवं मनोहर बना देते हैं। जिस पादप समूह को आततायी पतझड़, पत्र पुष्प विहीन कर ठूंठ सदृश, जीर्ण–शीर्ण एवं जर्जर बना देता है, बसन्त का आविर्भाव उन्हें पुनः नव–किसलय दल से सुसज्जित कर, अनुपम सौन्दर्य वैभव से अलंकृत कर नवजीवन प्रदान कर देता है। भयंकर शीत से चराचर सृष्टि को उत्पीड़ित एवं त्रस्त करने वाले शिशिर की विदा और नवोल्लास के प्रतीक ऋतुराज बसन्त के अवतरण से समस्त जड़ चेतन उसी प्रकार उल्लसित एवं आनन्द मग्न हो उठते हैं, जिस प्रकार किसी अत्याचारी शासक के पराभव से समस्त प्रजाजन सुख–शान्ति और निश्चिन्तता का अनुभव कर आनन्द विभोर हो उठते हैं। बसन्त के आविर्भाव से समस्त वातावरण नव आभा, नव ज्योति, नव–छटा नव–सौन्दर्य एवं नव–आलोक से ज्योतिर्मान हो उठता है। मन्द–मन्द प्रवाहित, शीतल सुगन्धित दक्षिणी मलय समीर नव–विकासित पुष्प–दलों से अठखेलियाँ करने लगती है जिसके फलस्वरूप समस्त मानव–समाज नाच–रंग, गायन–वादन आदि नाना आमोद–प्रमोदों एवं विविध मनोरंजक क्रीड़ाओं में मग्न हो आत्म विस्मृत हो उठता है। अखिल विश्व में ऋतुराज बसन्त का अखण्ड साम्राज्य प्रतिष्ठित होने के फलस्वरूप मानव–जीवन में नहीं अपितु पशु–पक्षियों तक के हृदयों में भी नवोत्साह, नव–अभिलाषा, नवआशा, नव–चेतना, नव–जागरण एवं नव–स्फूर्ति का संचार होने लगता है। समस्त सृष्टि में विरला ही कोई हत भाग्य होगा जिसे कामन मयूर बसन्त की मनोमुग्धकारी, ज्योत्सनामय, अपूर्व, अनिबर्चनीय नयनाभिराम उज्ज्वल दैवीय बासन्तिक छटा को निरखकर नाच न उठता हो।

ऋतुराज बसन्त के आविर्भाव पर संवेदनशील रसिक कवि हृदय का तो कहना ही क्या वह तो ऋतुराज के इस अद्वितीय दिव्य सौन्दर्य पर मुग्ध हो उसकी सार्वभौमिक विजय का गुणगान करने लगता है। विश्व के अनेक कविजनों ने ऋतुराज की अनुपम शोभा और अपूर्व छटा का चित्रण कर अपनी लेखनी को चित्रकारों ने अपनी तूलिका को धन्य किया है। कविकुल चूड़ामणि महाकवि कालिदास ने 'कुमार सम्भव में बसन्त का इतना सरस, सजीव और हृदयग्राही चित्रण किया है कि रसिक पाठक गण उसे पढ़ते–पढ़ते आत्म विभोर और मन्त्र मुग्ध हो उठते हैं। कवि कुल शिरोमणि जयदेव, मैथिल कोकिल विद्यापति, महाकवि केशव प्रभृति कवि जनों के काव्य में तो बसन्त इठलाता सा दृष्टिगोचर होता है। जायसी की विरह दग्धा नायिका नागमति तो बसन्त के अलौकिक, दिव्य बासन्तिक सौन्दर्य की अनुपम छटा का अवलोकन कर अपनी विरह व्यथा ही नहीं प्रत्युत अपने प्राण स्वरूप प्रियतम को भी विस्मृत कर मस्ती में झूमने लगती है। भारतीय काव्य गगन के चन्द्र महाकवि तुलसी दास ने भी रामचरित मानस में बसन्त की बासन्तिक शोभा का चित्रांकन कर नव चेतना एवं नव–संकल्प का शुभ–संदेश दिया है। रीति–कालीन कवियों को तो पग–पग और डगर–डगर में बसन्त ही बिखरा दृष्टिगोचर होता है।

योगराज भगवान श्रीकृष्ण ने भी कुरुक्षेत्र के युद्ध प्रांगण में मोह ग्रस्त अर्जुन को अन्याय और अत्याचार का दमन करने और आततायी कौरवों के विरूद्ध लोहा लेने के लिए नव–साहस का सन्देश देते हुए उसमें दुष्ट दलन, पौरुष, वीरता और लोक कल्याण की भावना जागृत करने हेतु कहा था। ''ऋतुनाम कुसुमाकराः।'' छायावादी युग की प्रतिनिधि कवियित्री महावेदी वर्मा भी, अनुपम यौवनमयी, सौन्दर्यमयी प्रकृति प्रदत्त आभूषणों एवं आभरणों से समअलंकृत बसन्त रजनी का आह्वान करती हुई कहती है,'' धीरे–धीरे उतर क्षितिज से ऐ! बसन्त रजनी! तारकमय नववेणी बन्धन,'' इत्यादि। वस्तुतः बसन्त रजनी के चेतन, व्यापक, मनोमुग्धकारी व्यक्तित्व का दर्शन कराता है। अनन्त शक्तिशाली, नवचेतना जागृत करने वाले ऋतुराज बसन्त के विश्वव्यापी प्रभाव से तपोवन भी अछूते नहीं रहते। जिसके फलस्वरूप तपोवनों की शान्त उन्मुक्त, स्निग्ध, ज्योत्सनामयी सुरम्य प्राकृतिक बासन्तिक छटा तपोधनी महर्षियों के हृदयों में भी अनन्तता के भाव जागृत करने में समर्थ होती रही है। फलतः वे आत्म–साधन के साथ–साथ आध्यात्मिक चिन्तन में दत्तचित्त हों उस अनन्त सौन्दर्यशाली परम शक्ति समन्वित, निराकार निर्विकार, सर्वेश्वर, सर्वान्तर्यामी प्रभु का साक्षात्कार करने में भी सफल होते रहे हैं।

यही नहीं ऋतुराज बसन्त मातृभूमि के लाडले साहसी वीर देशभक्त नौजवानों को भी देश की स्वाधीनता और गौरव की रक्षा हेतु देश प्रेम की बलि वेदी पर हंसते–हंसते प्राणोत्सर्ग करने की भी प्रेरणा देता रहा है। जहाँ एक ओर यह महापर्व सहृदय, रसोन्मत्र मानव–हृदयों में रणोल्लास एवं आत्मोत्सर्ग की भावना का उदय कर उन्हें आततायी, देशद्रोही एवं पावन स्वर्गतुल्य सुखद मातृभूमि को पदाक्रान्त करने की इच्छुक शत्रु की विशाल वाहिनी से जूझने की शक्ति और साहस भी प्रदान करता रहा है। इसी भावना के वशीभूत हो हमारे शूरवीर और निर्भय राजपूत सैनिक केसरिया बाना पहन, वीररस में उन्मत्त हो, प्राणों का मोह त्याग, रणघोष सुनते ही शत्रु सैन्य पर टूट पड़ते और उससे लोहा लेते हुए या तो समस्त शत्रु–शत्रु सैन्य का विध्वंस कर विजयोल्लास में मत्त हो बसन्तोत्सव मनाया करते थे अथवा स्वयं जौहर व्रत धारण कर मातृभूमि की स्वतन्त्रता और सन्मान की रक्षा हेतु एक–एक करके वीरगति को प्राप्त हो जाते थे पर कभी भी शत्रु को पीठ दिखाकर कायरों की तरह रणभूमि से पलायन नहीं करते थे। पुरजा–पुरजा कट मरे तऊ न छाड़े खेत।' दूसरी ओर वीरांगना राजपूत ललनाएँ भी अपनी आत्मरक्षा हेतु पूजा की थाली लिए अपने साहसी वीरों का अनुगमन करते हुए जौहर व्रत का अनुष्ठान करने हेतु

ऋतुराज बसन्त मातृभूमि के लाडले साहसी वीर देशभक्त नौजवानों को भी देश की स्वाधीनता और गौरव की रक्षा हेतु देश प्रेम की बलि वेदी पर हंसते–हंसते प्राणोत्सर्ग करने की भी प्रेरणा देता रहा है। जहाँ एक ओर यह महापर्व सहृदय, रसोन्मत्र मानव–हृदयों में रणोल्लास एवं आत्मोत्सर्ग की भावना का उदय कर उन्हें आततायी, देशद्रोही एवं पावन स्वर्गतुल्य सुखद मातृभूमि को पदाक्रान्त करने की इच्छुक शत्रु की विशाल वाहिनी से जूझने की शक्ति और साहस भी प्रदान करता रहा है। इसी भावना के वशीभूत हो हमारे शूरवीर और निर्भय राजपूत सैनिक केसरिया बाना पहन, वीररस में उन्मत्त हो, प्राणों का मोह त्याग, रणघोष सुनते ही शत्रु सैन्य पर टूट पड़ते और उससे लोहा लेते हुए या तो समस्त शत्रु–शत्रु सैन्य का विध्वंस कर विजयोल्लास में मत्त हो बसन्तोत्सव मनाया करते थे अथवा स्वयं जौहर व्रत धारण कर मातृभूमि की स्वतन्त्रता और सन्मान की रक्षा हेतु एक–एक करके वीरगति को प्राप्त हो जाते थे पर कभी भी शत्रु को पीठ दिखाकर कायरों की तरह रणभूमि से पलायन नहीं करते थे।

प्रज्ज्वलित चिता में कूद पड़ती थी। अतः वीर हृदयों में इस प्रकार अदमनीय देश की स्वाधीनता की रक्षा हेतु साहस, अपूर्व वीरता, अद्भुत शौर्य, महान आत्म त्याग एवं अभूतपूर्व आत्म बलिदान की भावना का उदय करने वाला ऋतुराज बसन्त वस्तुतः सत्यार्थों में ऋतुराज कहलाने का अधिकारी है। इसी भावना को लक्ष्य कर श्रीमती सुभद्रा कुमारी, चौहान ने अपनी ओजस्विनी कविता, ''वीरों का कैसा हो बसन्त'' में भारतीय वीरों द्वारा सत्यार्थों में बसन्त मनाने का चित्रांकन किया है। जिसका साक्षी आज भी भारत का प्रहरी स्वरूप हिमाचल, पानीपत, कुरुक्षेत्र, हल्दी घाटी तथा राजस्थान के अब रण–प्रांगण एवं 1857 के प्रथम भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में झांसी की रानी सम वीरांगनाओं और मंगल पाण्डे समान देशभक्तों समान देश प्रेम की बलिवेदी पर प्राण न्यौछावर करने वाले वीरों की गाथाएँ सुना रही हैं।

भारत माँ के वक्ष स्थल स्वरूप पंचनद (पंजाब) के वीरों साहसी सपूतों ने अपनी मातृभूमि से सदैव यही वरदान एवं शुभाषीष मांगी है, 'मेरा रंग दे बसन्ती चोला माए री मेरा रंग दे बसन्ती चोला', और ऐसा ही अलौकिक बसन्ती चोला धारण कर शहीद भगतसिंह और उनके साथी वीरों ने, पराधीनता की बेड़ियों में जकड़ी मातृभूमि को स्वतन्त्र कराने हेतु हंसते–हंसते फांसी के फन्दों को चूम कर गले लगा लिया था।

ऋतुराज बसन्त के उस पावन महापर्व को एक अन्य अभूतपूर्व बलिदान ने और भी चार चान्द लगा दिए हैं। इसी पवित्र पर्व के दिन धर्मवीर, दृढ़व्रती चतुदर्श वर्षीय वीर बालक हकीकत राय ने वैदिक धर्म की रक्षा हेतु तुच्छ प्राणों का मोह त्याग, अपने अमर बलिदान तत्कालीन आततायी नृशंस मलेच्छ शासक का गर्व चूर्ण किया था। कहना न होगा कि ऋतुराज बसन्त द्वारा ही उस वीर बाल हृदय में भी धर्म की बलिवेदी पर प्राणोत्सर्ग करने की प्रेरणा प्रदान की गई थी। पर यह कहना भी अत्युक्ति न होगी कि वीर बालक हकीकत के इस अमर बलिदान ने ऋतुराज बसन्त को महत्त्वपूर्ण, गौरवशाली और प्रभावशाली बना दिया था।

बसन्त के महान् पर्व के दिन वीर बालक हकीकत ने अपने जिस अद्भुत आत्म त्याग, अपूर्व निर्भयता, अदम्य साहस, दृढ़ संकल्प एवं अद्वितीय धार्मिक आस्था, विश्वास और श्रद्धा का परिचय दिया उन्हीं अमिट पद चिन्हों का अनुसरण करते हुए धर्म प्रधान भारत की भावी पीढ़ियाँ चिरन्तन काल तक देश और धर्म की बलि वेदी पर हंसते–हंसते आत्म बलिदान करने के लिए सतत् तत्पर रहेंगी। हकीकत का बलिदान किसी व्यक्ति विशेष का बलिदान नहीं वह तो स्वधर्म, स्वजाति एवं स्वदेश हित प्राणोत्सर्ग करने वाले साहसी, निर्भय शूरवीरों के आत्म बलिदान का प्रतीक है। अन्याय, अत्याचार, उत्पीड़न और शोषण के सन्मुख शीश न झुकाने वाले महान् त्यागी हृदयों का आदर्श है। वीर हकीकत पंचनद की उसी वीर प्रसू पावन भूमि पर अवतरित हुआ जिसके साहसी वीर सपूतों को मातृभूमि की स्वतन्त्रता का अपहरण कर उसे पराधीनता की अवमेघ लौह श्रृंखलाओं में आबद्ध करने वाले, उसे पदाक्रान्त एवं पददलित करने की कुत्सित इच्छा से पूर्ण विदेशी दस्युओं से सदैव लोहा लेने एवं आत्मोत्सर्ग करने का गौरव प्राप्त होता रहा है। इसीलिए यह वीर भूमि शाश्वत काल से उसी प्रकार अपने दिव्य पुत्रों के अमर बलिदान अर्पित कर बसन्त के शुभागमन का स्वागत उनके रक्त से करती रही है। ऐसे ही निर्भय, साहसी देशभक्त वीरों ने अनेक बार देश और धर्म की नैराश्य पूर्ण, साहस विहीन, दुःख दैन्य ग्रस्त, अभाव पीड़ित परिस्थितियों में पुनः बसन्त का अवतरण कर उसे सुख सौभाग्य, समृद्धि रूपी पत्र पुष्प समन्वित और बल वैभव से सम्पन्न करने का दृढ़ संकल्प पूर्ण किया है। यद्यपि इस दृढ़ व्रत के पालनार्थ उन्हें नाना यातनाएँ भी सहन करनी पड़ी, आजन्म आपद्विपदाओं की विशाल वाहिनी से जूझना पड़ा। यहीं नहीं प्रत्युत अपने प्राण तक भी विसर्जित करने पड़े पर फिर भी उन्होंने साहस नहीं छोड़ा।

बसन्त का यह पावन शुभ पर्व प्रतिवर्ष हमें उन्हीं भारत माँ के सच्चे वीर सपूतों का स्मरण कराता है। आओ! आज हम सब उन अमर शहीदों का अभिनन्दन करते हुए उन्हें अपनी भाव–भीनी श्रद्धांजलि अर्पित करें। केवल बसन्ती वस्त्र धारण कर आमोद–प्रमोद में रत हों, मनोरंजन और हास–विलास के साधनों में संलग्न होकर ही हमारा बसन्तोत्सव मनाना सार्थक नहीं हो सकता प्रत्युत ऋतुराज के आविर्भाव द्वारा नव–जागरण नवोत्साह, नव–चेतना, नव–प्रेरणा एवं नवजीवन का सन्देश ग्रहण कर हमें राष्ट्र के जीवन में सत्यार्थों में बसन्त लाने का प्रयत्न करना होगा ताकि भारतीय जन–जीवन पूर्णतया सुखी, सम्पन्न, समृद्ध, उन्नतिशील, विकासशील और प्रगतिशील बन सके।

यद्यपि हमारे देश को पराधीनता की श्रृंखलाओं से मुक्त हुए साठ से भी अधिक वर्ष हो चुके हैं पर अभी तक इस अभागे देश के जन–जीवन में बसन्त का अवतरण नहीं हो सका। आज भी इस देश की पीड़ित, शोषित, अभावग्रस्त जनता निर्धनता एवं भ्रष्टाचार के जुए के नीचे दबी कराह रही है। आज भी देश में चतुर्दिक बेकारी, मंहगाई, रिश्वतखोरी, लूट–पाट, हिंसा, प्राणहन, अन्याय, अत्याचार, शोषण, उत्पीड़न एवं असन्तोष का अखण्ड साम्रज्य व्याप्त है। आज भी अलगाववादी, उग्रवादी तथा आतंकवादी प्रवृत्तियों द्वारा चारों ओर निरीह, निरपराध, निर्दोष व्यक्तियों की हत्याएँ एवं राष्ट्र की अमूल्य सम्पत्ति को ध्वस्त किए जाते देख समस्त देशवासी आतंकित और त्रस्त हो रहे हैं। समस्त जन–जीवन अस्त–व्यस्त हो गया है। जहाँ एक ओर कतिपय प्रान्तों में असुरक्षा, अव्यवस्था एवं आतंक से हाहाकर मचा हुआ है। वहाँ दूसरी ओर अधिकार प्राप्ति पद लोलुपता, कुर्सी की खींचतान शासन हथियाने, साम्प्रदायिकता, धर्मान्धता, कट्टरता, क्रूरता और बर्बरता के ताण्डव नृत्य ने समस्त वातावरण को विषाक्त, बना दिया है। वहाँ दूसरी ओर वाह्य आक्रामक शक्तियों को इस देश की अखण्डता, एकता, संगठन, समृद्धि और सुख शान्ति को मुँह बाए निगलने के लिए तत्पर होते देखकर प्रत्येक भारतवासी का हृदय अत्यधिक आत्मग्लानि, पीड़ा और व्यथा से भर उठा है।

अतः हार्दिक दुःख से कहना पड़ता है कि समस्त विश्व को मैत्री, बन्धुत्व, प्रेम, मानवता एवं आध्यात्मिकता का अमर सन्देश वहन करने वाला, धन–धान्य–समन्वित, पूर्व का यह प्रतिनिधि देश आज स्वयं ही बल वैभवहीन, मानसिक दासता में आबद्ध घोर निराशा एवं पतन के गर्त में डूब रहा है। आन्तरिक और वाह्य संघर्षों ने इसकी जड़ों को खोखला कर दिया है। एक ओर विदेशी शत्रु अपनी गिद्ध दृष्टि जमाए इसकी स्वतन्त्रता का पुनः अपहरण करने हेतु सन्नद्ध हो रहे हैं तो दूसरी ओर नाना देशद्रोही जयचन्द देश में उपद्रव और अशान्ति मचाकर उसके अनुशासन और व्यवस्था को भंग कर, इसे पुनः विदेशी शक्तियों के हाथों में सौंप अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं।

अतः ऋतुराज बसन्त के अवतरण के शुभ अवसर पर प्रत्येक भारतवासी को यह शपथ ग्रहण करनी होगी कि वह अपना सर्वस्व न्यौछावर करके भी निराशा एवं दुर्दैव रूपी शीत से पीड़ित राष्ट्र में आज्ञामय, सुख–सौभाग्य समन्वित जीवन रूपी शुभ बसन्त लाने के लिए सदैव कटिबद्ध रहेंगे। यही नहीं प्रातः स्मरणीय, जगत वन्द्य पूज्य बापू के अपूर्वस्वप्न को साकार करने हेतु भारत में सत्यार्थों में राम–राज्य रूपी बसन्त की प्रतिष्ठा करने में अपना सर्वस्व अर्पण करने से भी नहीं हिचकिचायेगा। तभी हम वास्तव में बसन्त मनाने के अधिकारी होंगे।

राष्ट्र जीवन तरू के इस निराशा रूपी पतझड़ को समाप्त कर इसे पुनः सुख शान्ति, समृद्धि, वैभव, शक्ति एवं आशा के नव पल्लवों और पुष्पाभरणाों से समलंकृत करने का बीड़ा उठाना होगा। इस दुर्गम कण्ट–काकीर्ण पथ का अवलम्बन करने हेतु प्रत्येक भारतवासी को पूर्ण सहयोग देने के लिए अपने निजी सुखों हितों संकीर्ण स्वार्थ वृत्तियों, पद लालसा एवं अधिकार गर्व आदि सभी का त्याग करना होगा। राष्ट्रीय जीवन में बसन्त का आविर्भाव करने हेतु पूंजीवाद का सर्वथा उन्मूलन कर, समरसता, समानता, सहिष्णुता, पारस्परिक सहानुभूति आदि की प्रतिष्ठा करनी होगी। प्रत्येक भारतवासी को कठिन परिश्रम, त्यागमय जीवन को अपनाते हुए राष्ट्र दायित्वों और नागरिक कर्त्तव्यों का समुचित और सत्यता से पालन करते हुए समाज और राष्ट्रहित के लिए अपना सर्वस्व अर्पित करने के लिए सतत प्रयत्नशील रहना होगा तभी हमारा बसन्तोत्सव मनाना सार्थक और सफल हो सकेगा।

– डी–113, शिवविहार, रोहतक रोड, दिल्ली–110087

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के 123 वें जन्म दिवस 23 जनवरी पर विशेष

अद्वितीय सोच के धनी – नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

– आचार्य उमाशंकर शास्त्री

हमारी मातृभूमि रत्नगर्भा है। इस रत्नगर्भा भारत माँ के गर्भ से अनेकों राजा, महाराजा, योद्धा, शूरवीर, ज्ञानी, ध्यानी, ऋषि महर्षि योगी तपस्वी और न जाने कितने 'रत्न' पैदा हो चुके हैं। इन्हीं देदीप्यमान रत्नों में 'सुभाषचन्द्र बोस' अमूल्य रत्न थे। सुभाष बाबू, क्रांतिकारी थे, ज्ञानी थे, ध्यानी थे, राष्ट्रहित में अपना सर्वस्व समर्पण करने वाले एक शाश्वत हस्ताक्षर थे। जिनके व्यक्तित्व, कृतित्व का प्रभाव सदा अक्षुण्ण रहेगा।

जिस धरती पर सुभाष ने जन्म लिया उसी धरती पर एक महान व्यक्तित्व का स्वामी एक महान आदर्शवान सम्राट ने भी जन्म लिया था जिसका नाम था सम्राट अशोक। भारतवर्ष के इस महान सम्राट को युद्ध से वितृष्णा हो गई और वह धर्म के शरण में चला गया था। उसके कानों में प्रेरणामंत्र गूंजने लगा।

बुद्धं शरणं गच्छामि। धम्मं शरणं गच्छामि। संधं शरणं गच्छामि।।

वह राजा बुद्ध की शरण में चला गया। धर्म की शरण में चला गया। संघ की शरण में चला गया। हमारे देश में एक और राजा का प्रदुर्भाव हुआ जो अपने मन का राजा था और जनता का वह हृदय सम्राट था नेता जी सुभाषचन्द्र बोस जो स्वनिर्मित राज्य का अधिष्ठाता बना। इस राजा को धर्म से वितृष्णा हो गई और वह युद्ध की शरण में चला गया और इस राजा के कानों में प्रेरणा मंत्र गूंजने लगा।

युद्धं शरणं गच्छामि, कम्मं शरणं गच्छामि, संधं शरणं गच्छामि।।

यह राजा युद्ध की शरण में चला गया। कर्म की शरण में चला गया और संघ (आजाद हिंद संघ) की शरण में चला गया। सम्राट अशोक ने युद्ध को छोड़ा और धर्म को अपनाया। युद्ध की विभीषिकाओं से उसका मन भर गया। इसने उस युद्ध से अपना सम्बन्ध नहीं रखा जिसका आधार था – रक्तपात, नरसंहार व हाहाकार। सुभाष ने धर्म को छोड़ा। युद्ध को अपनाया। धर्म का तत्कालीन विकृत रूप से उसका मन भर गया। जिसका आधार था प्रदर्शन, मिथ्याचार तथा आडंबरपूर्ण व्यवहार। सुभाष ने धर्म का बाह्य रूप तो छोड़ दिया परन्तु उसकी मूल भावनाओं को नहीं छोड़ सका। धर्म को अपनाकर भी वह युद्ध करता रहा। सुभाष युद्ध करता था 'अज्ञान के अंधकार' से हिंसा की हिंसक प्रवृत्ति से और मन की दुर्बलता से।

सुभाष का धर्म था त्याग, बलिदान, आत्मोत्थान, ईश्वरत्व की उपासना, मातृभूमि की मुक्ति और अथक जनजागरण।

अशोक ने दीक्षा ली थी उपगुप्त से और सुभाष ने दीक्षा ली थी – कर्मवीर चित्तरंजन दास से। अशोक तथा सुभाष की प्रेरणा भूमि एक ही रही। कलिंग के युद्ध ने अशोक का हृदय परिवर्तन किया और उसी का आधुनिक रूप उड़ीसा में सुभाष की पार्थिव देह और उसके संकल्पों का जन्म हुआ।

सुभाष का जन्म 23 जनवरी, 1897 को शनिवार के दिन के 12:15 अपरान्ह पर हुआ। सुभाष का जन्म मध्यान्ह को हुआ और वह जीवन भर मध्यान्ह की सूर्य की भांति चमकता रहा।

उड़ीसा के कटक में जिस समय सुभाष का जन्म हुआ। उस समय भारतवर्ष में हजारों बच्चों का जन्म हुआ होगा पर वे सबके सब तो सुभाष जैसे संकल्पी, धुनी, लक्ष्यनिष्ठ, पराक्रमी और शौर्यवान नहीं हुए। यही स्थिति हमें सोचने को विवश करती है कि यद्यपि संसार में हजारों व्यक्ति एक ही समय में जन्म लेते हैं पर उसमें विरले ही ऐसे होते हैं जो जीवन के लिए कोई ध्येय लेकर आते हैं और इस ध्येय की पूर्ति के लिए उनकी हर सांस आती जाती है। सुभाष का अस्तित्व समुद्र के असंख्य बुलबुलों के 'बाड़व ज्वाला' के समान था। उस समय भारत बड़े आंसुओं के सागर के समान था। जिसमें निराशा, हताशा, हीन भावना की धारा में आकर मिल रही थी। सागर के धरातल पर भी कभी लपटें उठती हैं। सुभाष का जीवन आसुंओं के सागर में उठी हुई लपट के समान था। यह वह लपट थी जिसने अपने को प्रकाश दिया और अपने शत्रुओं को जलाया।

उस प्रचंड 'लपट' के बुझने की कथा जेनरल हबीबुर्रहमान की अभिव्यक्ति के आधार पर चंद शब्दों में प्रस्तुत किया जाता है। सैगोन से 17 अगस्त, 1945 संध्या 5 बजकर 15 मिनट पर उड़ान भरा और दूरेन पहुँचा। रात्रि विश्राम टूरेन में ही हुआ। अगले दिन 18 अगस्त, 1945 को फिर विमान अपरान्ह में तोइहक विमान स्थल पर रूका। विमान में पेट्रोल भराने तथा खाने–पीने के बाद पुनः विमाल 2:35 मिनट पर उड़ा। 200 से 300 फीट ऊपर विमान उठा ही था कि भयंकर आवाज सुनाई पड़ी। नेताजी, जनरल हबीब तथा जनरल शीदी जो विमान के अंदर थे, सभी लोगों ने सोचा दुश्मन के लड़ाकू विमान ने उड़ते देख लिया है और ऊपर से झपट्टा मारा है। परन्तु बाद में समझ में आया कि पोटे इंजन का 'प्रोफेलर' टूट गया है। पोटे इंजन काम करना बन्द कर दिया है। केवल स्टार बोर्ड इंजन काम कर रहा था। हवाई जहाज ने डोलना प्रारम्भ कर दिया था। चालक उसका संतुलन संभालने का प्रयत्न कर रहा था। जनरल हबीब ने नेताजी को देखा, वे बिल्कुल अविचल थे। कुछ ही क्षणों में विमान नाक की तरफ से जमीन में टकराया और थोड़ी देर के लिए आंखों के सामने अंधेरा छा गया। कुछ क्षणोपरान्त जब जनरल हबीब की चेतना लौटी तो उसने अनुभव किया कि सारा सामान उसके ऊपर लदा है और निकट में आग फैली है। नेताजी के सर में चोट लगी थी और वे खड़े हो चुके थे निकलने का प्रयास कर रहे थे। परन्तु पीछे से निकलना सम्भव नहीं था। जनरल हबीब ने नेताजी को आगे से निकलने का निवेदन किया। नेताजी को स्थिति का अंदाजा

हो गया था। उन्होंने विमान के अग्रभाग से निकलने का प्रयतन किया जो जमीन से टकराकर चूर हो गया था और जिससे लपटें उठ रही थी। नेताजी उन्हीं लपटों से बाहर निकल गये। नेताजी के खाकी सूती कपड़े पर पेट्रोल फैल गया था और कपड़ों में आग पकड़ ली थी। विमान के बाहर खड़े नेताजी अपने बुशकोट का बेल्ट खोलने का प्रयास कर रहे थे। जनरल हबीब नेताजी की ओर झपटा और पट्टा खोलने में उनकी मदद करने लगा जिससे उसके हाथ बुरी तरह जल गये। नेताजी का चेहरा बुरी तरह जल गया था तथा कट–पिट चुका था। नेताजी कुछ मिनट तक खड़े रहे फिर भूमि पर गिर पड़े। जनरल हबीब को नेताजी की स्थिति देखकर दिल बैठ सा गया और वे भी नेताजी के पास ही पड़ गये और बेहोश हो गये। विमान के दुर्घटना होने के 15 मिनट पश्चात् ही एम्बुलेंस से घायल नेताजी व जनरल हबीब को तोरहूक के सैनिक अस्पताल में पहुंचा दिया गया। नेताजी की बेहोशी नहीं टूटी थी परन्तु जनरल हबीब को होश आ गया था। वे नेताजी के बगल ही में थे। जनरल हबीब किसी तरह लड़खड़ाकर नेताजी के पास पहुंचा। जापानियों ने नेताजी को बचाने का भरसक प्रयास किया परन्तु सब व्यर्थ। अस्पताल में लाये जाने के छह घंटे पश्चात् 18 अगस्त, 1945 के 9 बजे रात्रि में नेताजी शांतिपूर्वक इस संसार से विदा हो गए। क्रांति की लपट बुझ गई। जनरल हबीब ने अपने वक्तव्य में बताया कि मूर्छा की हालत में कभी–कभी हसन का नाम पुकारा। मृत्यु के कुछ समय पूर्व उन्हें होश आया और उन्हें जब पूर्ण विश्वास हो गया कि वे बच नहीं सकेंगे तो हबीब से उन्होंने देशवासियों के नाम छोटा संदेश दे गये। उन्होंने हबीब से कहा – 'हबीब! मेरा अंत बहुत निकट आ गया है। अपने देश की आजादी के लिए मैं जीवनभर लड़ता रहा हूँ। तुम जाकर देशवासियों से कहना कि वे भारत की आजादी के लिए लड़ाई जारी रखें। भारत आजाद होगा और बहुत शीघ्र ही नेता जी के यही अंतिम शब्द थे।

जनरल हबीब ने बहुत प्रयास किया कि नेताजी के शव को सिंगापुर भेजने का प्रबन्ध किया जाये अथवा टोकियो भेजने का। सैनिक अस्पताल के कर्मचारियों ने बताया कि यह संभव नहीं है। नेताजी के जनाजे को विमान में रखने में व्यवहारिक कठिनाई आ रही थी। जनरल हबीब की सम्मति से ही तोईहूक अस्पताल से सम्बद्ध जो पवित्र स्थान था वहाँ पूरे फौजी सम्मान के साथ नेताजी का दाह संस्कार किया गया। नेताजी का दाह संस्कार 20 अगस्त, 1945 को किया गया।

जनरल हबीब के घाव भरने में लगभग तीन सप्ताह लग गये। तीन सप्ताह बाद एक एम्बुलेंस विमान टोकियो जाने वाला था। जनरल हबीब को उसमें स्थान मिल गया और नेताजी के भस्म के साथ सितम्बर को वे टोकियो पहुंच गए।

नेता जी के पार्थिव शरीर का भस्म तीन दिनों तक श्री राममूर्ति के घर रखा गया जो आजाद हिंद संघ की जापान शाखा के अध्यक्ष थे। फिर 14 सितम्बर को नेताजी के भस्म का पात्र सूरीनाम क्षेत्र में रेंकोजी के बौद्ध मंदिर में रख दिया गया।

नेताजी का जीवन भी शानदार था और मृत्यु भी। जिस शान से नेताजी ने इस संसार के सामने अपने कृतित्व को रखा वह निराला था। हमारे देश में हजारों क्रांतिकारियों ने जन्म लिया। देश के लिए अपना बलिदान दिया परन्तु नेताजी के सोच की दिशा अपने आप में अद्वितीय थी। एक अकेला व्यक्ति लाखों लोगों का संगठन कर देश की आजादी के लिए 'प्रबलतम' शत्रु को ललकारे और शत्रु के छाती पर अपना विजय पताका फहरा दे, यह केवल नेताजी ही कर सकते थे। नेताजी के जीवन के किसी भी 'फलक' को देखें तो हर फलक में तीक्षणता, तीव्रता तथा ज्योतिर्मय आभा दिखाई पड़ती है।

आज नेताजी हमारे बीच नहीं हैं परन्तु उनके जीवन की प्रचंडता और प्रखरता का सूक्ष्म प्रभाव आज भी भारतवासियों के हृदय पर अक्षुण्ण है।

आज नेताजी जैसे व्यक्तित्व की परम आवश्यकता है। देश की आजादी का सपना देखने वाले उस महान सपूत के महान राष्ट्र की महानता पर ग्रहण लग गया है और घोटाला, भ्रष्टाचार, नैतिक पतन की पराकाष्ठा रूपी राहु–केतु भारत माता के जाज्वल्यमान दिव्य छवि को ग्रस रहा है। अन्त में .....

...

अवसाद पूर्ण जीवन को हास चाहिए।
देश के गद्दारों की लाश चाहिए।
मुमूर्ष मानवता को सांस चाहिए और,
भारत को फिर से सुभाष चाहिए।।

– महर्षि दयानन्द सरस्वती बाल मंदिर, तेघड़ा, बेगूसराय, बिहार–851133, मो.:–9905416899

श्री भूपनारायण शास्त्री जी का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के अनेकों वर्षों तक प्रधान रहे वयोवृद्ध आर्य नेता श्री भूपनारायण शास्त्री जी का लगभग 103 वर्ष की आयु में दिनांक 22 जनवरी, 2020 (बुधवार) को दोपहर हृदयगति रूक जाने से निधन हो गया है। श्री शास्त्री जी जीवन पर्यन्त आर्य समाज एवं वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार में सक्रिय रहे। उनके निधन से आर्य जगत की अपूर्णीय क्षति हुई है। वह अपने पीछे पुत्र, पुत्रियों एवं पौत्र, पौत्रियों का भरा पूरा परिवार छोड़ गये हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने श्री भूपनारायण शास्त्री जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से उनकी आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करने तथा पारिवारिकजनों को इस दुःख की घड़ी में धैर्य एवं दारूण कष्ट को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की है।

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

वैदिक मिशन मुम्बई के अध्यक्ष आचार्य सोमदेव शास्त्री जी के संयोजन में 31वें वेद पारायण यज्ञ के अवसर पर 31 कुंडीय महायज्ञ का किया गया आयोजन

पिपलियामंडी, वैदिक मिशन मुम्बई के अध्यक्ष आचार्य सोमदेव शास्त्री जी द्वारा ग्राम–नैनोरा में आयोजित चार दिवसीय यजुर्वेद पारायण यज्ञ का कार्यक्रम 13 जनवरी, 2020 को 31 कुण्डीय महायज्ञ की पूर्णाहुति के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का संचालन आचार्य सोमदेव शास्त्री जी ने किया।

इस अवसर पर श्री बाबूलाल नागर जी का आचार्य सोमदेव शास्त्री जी ने मोतियों की माला से अभिनन्दन किया। गुजरात से आये स्वामी धर्मबन्धु जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि मानव की कामना होती है कि सुख कैसे मिले। उन्होंने कहा कि यदि सुखों का अभाव है तो प्रतिदिन यज्ञ करें, क्योंकि यज्ञ को ही सर्वश्रेष्ठ कर्म माना गया है। उन्होंने गृहस्थ को स्वर्ग समान बनाने के लिए चार सूत्र अपनाने पर बल दिया जिसमें पहला है दान और वह भी विद्यादान जो सबसे श्रेष्ठ है। द्रव्य दान, श्रमदान और वाणी की मधुरता इनके द्वारा हम अपने जीवन स्वर्ग समान बना सकते हैं। उन्होंने कहा कि वाणी में मधुरता लाने के लिए मन व मस्तिष्क में ज्ञान पैदा करना होगा और ज्ञान के

लिए सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय अत्यन्त आवश्यक है।

इस अवसर पर श्री योगेन्द्र जी याज्ञिक ने सुन्दर भजन के माध्यम से बताया कि जो जन प्रभु के नजदीक होते हैं वे अत्यन्त खुशनसीब होते हैं। पं. भानू प्रसाद जी शास्त्री सहित अन्य विद्वानों ने मनुष्य जीवन के कल्याणार्थ कई अच्छी–अच्छी बातें बताई। कार्यक्रम के सूत्रधार आचार्य सोमदेव शास्त्री जी ने सभी आमंत्रित अतिथियों, सन्तों आदि का शॉल, श्रीफल एवं मोतियों की माला से अभिनन्दन किया। कार्यक्रम में गाँव के सैकड़ों व्यक्तियों के अतिरिक्त आस–पास के गाँव बूढ़ा टकरावद, गुड़भेली, डोरवाड़ा, खेड़ाखदान, कनपट्टी, पंथबरखेड़ा, खोखरा, पिपलियामंडी सहित कई गाँव के भारी संख्या में आर्य बन्धु उपस्थित थे। कार्यक्रम को सफल बनाने में आर्य समाज, आर्य युवक परिषद् एवं ग्रामवासियों का सराहनीय सहयोग रहा। कार्यक्रम के अन्त में आभार ज्ञापन आचार्य सोमदेव शास्त्री जी द्वारा किया गया। सहभोज के साथ उत्साहपूर्ण वातावरण में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज एवं मातृ छाया गुरुकुल, साधना केन्द्र हाथरस, उत्तर प्रदेश में सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का दौरा

श्री बुद्धसेन आर्य एवं श्री कल्याण सिंह ने किया स्वामी आर्यवेश जी का स्वागत

गत दिनों स्वामी आर्यवेश जी ने स्वामी ब्रह्मानन्द जी के साथ आर्य समाज, हाथरस एवं मातृ छाया गुरुकुल, साधना केन्द्र हाथरस, उत्तर प्रदेश का दौरा किया तथा वहाँ की गतिविधियों पर अधिकारियों के साथ चर्चा की। अपने मथुरा तथा हाथरस प्रवास के दौरान स्वामी आर्यवेश जी आर्य समाज हाथरस में पधारे तथा वहां के समस्त आर्यजनों ने उन्हें शॉल भेंटकर सम्मानित किया। स्वामी जी के साथ स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, श्री धर्मेन्द्र आर्य आदि भी साथ थे। इसी प्रकार हाथरस स्थित मातृ छाया गुरुकुल साधना केन्द्र में अपने साथियों के साथ पहुंचे तथा वहां पढ़ रहे छात्रों के साथ कुछ क्षण बिताये और उनके अनुभव साझा किये। स्वामी आर्यवेश जी का गुरुकुल के संचालक श्री कल्याण सिंह आर्य जी ने अपने अन्य पदाधिकारियों के साथ मिलकर स्वागत किया।

आर्य समाज विकासपुरी, (बाहरी रिंग रोड), नई दिल्ली में

सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी एवं सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव जी का किया गया स्वागत

गत 24 नवम्बर, 2019 को प्रातः 8 से 10 बजे तक आर्य समाज विकासपुरी, (बाहरी रिंग रोड), नई दिल्ली में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी को मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया। उनके साथ सभामंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य जी भी कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। आर्य समाज की ओर से श्री वेद प्रकाश आर्य एवं अन्य सभी अधिकारियों ने दोनों नेताओं का स्मृति चिन्ह देकर स्वागत किया।

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने अपना सारगर्भित उद्बोधन देकर सभी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। स्वामी जी ने श्री वेद प्रकाश आर्य द्वारा समाज के कार्यों को दायित्वपूर्ण तरीके से निभाने एवं कुशलता से कार्य करने के लिए विशेष आशीर्वाद एवं बधाई दी।

आर्य समाज के धर्माचार्य एवं अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वान आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री जी ने स्वामी आर्यवेश जी

एवं प्रो. विट्ठलराव आर्य जी का संक्षिप्त परिचय एवं उनके कार्यों का दिग्दर्शन आर्यजनों को कराया।

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002
के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।